ʿणवगेंवज्ज जाव सवट्ठसिध्दिविमाणवासियदेवा सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेंत्तं फोसिदं ? ।। ४७ ।.l

ʿसुगमं .l

ʿलोंगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ४८ ।.l

ʿसत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादेहि अदीद-वट्टमाणेण चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । णवरि सव्वट्ठसिध्दिम्हि मारणंतिय-उववादविरहि-सेसपदेहि माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो त्ति वत्तव्वं.l

ʿइंदियाणुवादेंण एइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोंसिदं ? ।। ४९ ।.l

ʿसुगमं .l

ʿसव्वलोगो ।। ५० ।.l

ʿनौ ग्रैवेयकोंसे लेकर सर्वार्थसिध्दिविमान तकके देव-स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ४७ ।.l

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿउपर्युक्त देव उक्त पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ४८ ।.l

< स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुध्दात, वैक्रियिकसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद पदोंकी अपेक्षा अतीत व वर्तमान कालसे चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । विशेष इतना है कि सर्वार्थ - सिध्दीमें मारणान्तिक व उपपाद पदोंको छोड शेष पदोंकी अपेक्षा मानुषक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पृष्ट हैं, ऐसा कहना चाहिये ।>

ʿइन्द्रियमार्गणानुसार एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ४९ ।.l

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʻउपयुक्त जीव उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। ५० ।ʼ

फोसणाणुगमे एइंदियाणं फोसणं

ʻएत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । तीदेण सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो । वेउव्वियपदेण लोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । णवरि सुहुमाणं वेउव्वियं णत्थि ।ʼ

ʻबादरेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ५१ ।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻलोगस्स संखेज्जदिभागो ।। ५२ ।ʼ

ʻकुदो ? पंचरज्जुबाहल्लं रज्जुपदरं वाउक्काइयजीवावूरिदं बादरएइंदियजीवावूरिदसत्तपुढवीओ च, तासिं पुढवीणं हेट्ठा ट्ठिदवीसवीसजोयणसहस्सवाहल्लं तिण्णि तिण्णि वादवलयखेत्ताणि लोगंतट्ठिदवाउक्काइयखेत्तं च एगट्ठं कदे तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो खेत्तविसेसो उप्पज्जदि । तेण लोगस्स संखेज्जदिभागो अदीद-वट्टमाणेसु कालेसु लब्भदि ।ʼ

< यहां वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा स्वस्थान, वेदनासमुध्दात, कषायसमुध्दात, मारणान्तिकसमुध्दात और उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है । वैक्रियिकसमुद्घात पदसे लोकका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है । विशेष इतना है कि सूक्ष्म जीवोंके वैक्रियिकसमुद्घात नही होता ।>

ʻबादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त और बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ५१ ।ʼ

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʻउपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ५२ ।ʼ

< क्योंकि वायुकायिक जीवोंसे परिपूर्ण पांच राजु बाहल्यरूप राजुप्रतर, बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे परिपूर्ण सात पृथिवियों उन पृथिवियोंके नीचे स्थित बीस बीस सहस्र योजन बाहल्यरूप तीन तीन वातवलयक्षत्रों, तथा लोकान्तमें स्थित वायुकायिकक्षेत्रको एकत्रित करनेपर तीन लोकोंका

संख्यातवां भाग और मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्रविशेष उत्पन्न होता हैं । इसलिये अतीत व वर्तमान कालोंमें लोकका संख्यातवां भाग प्राप्त होता है ।>

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿसमुग्घाद-उववादेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ५३ ।।

ʿसुगमं ।

ʿसव्वलोगो ।। ५४ ।।

ʿएत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । वेदण-कसाएहि तीदे काले तिण्हं लोगाण संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एवं वेउव्विएण वि, पंचरज्जुआयदतिरियपदरम्मि सव्वत्थ विउव्वमाणवाउक्काइयाण तीदे काले उवलं-भादो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

ʿबीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्थाणेहि केंव-डियं खेत्तं फोसिदं ।। ५५ ।।

ʿसुगमं ।

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ५६ ।।

ʿसमुद्‌घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ५३ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿउक्त जीवों द्वारा समुद्‌घात व उपपादकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ५४ ।।

< यहां वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । वेदनासमुद्‌घात और कषायसमुध्दात पदोंसे अतीत कालमे तीन लोकोंका संख्यातवां भाग तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यात-गुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इसी प्रकार वैक्रियिकसमुध्दात पदकी अपेक्षा भी तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, अतीत कालकी अपेक्षा पांच राजु आयत तिर्यक्प्रतरमें सर्वत्र विक्रिया करनेवाले वायुकायिक जीव पाये जाते हैं । मारणान्तिकसमुध्दात व उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है ।>

ʿद्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट हैं ? ।। ५५ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿउपर्युक्त जीवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। ५६ ।ʾ

< १ अ.ब.स. प्रतिषु वि वट्टम्माण इति पाठः।>

फोसणाणुगमे वियलिंदियाणं फोसणं

ʿएत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणेहि तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखे-ज्जगुणो फोसिदो । एत्थ सत्थाणखेत्ते आणिज्जमाणे सयंपहपव्वदादो परभागट्ठियखेत्त-माणिय संखेज्जसूचीअंगुलेहि गुणिदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तं सत्थाणखेत्तं होदि । विहारवदिसत्थाणखेत्त आणिज्जमाणे तिरियपदरं ठविय संखेज्जजोयणाणि बाहल्लं होंति त्ति संखेज्जजोयणेहि गुणिय पुणो एदं बाहल्लमेगुणवंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । अपज्जत्ताणं विहारवदिसत्थाणं णत्थि ।ʾ

ʿसमुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ।। ५७ ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ।। ५८ ।ʾ

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वट्टमाणकालवेक्खो णिद्देसो । तेणेत्थ खेंत्तपरू-वणा कायव्वा । वेयण- कसायपदेहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरिय-

----

< यहां वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वथान पदोंसे अतीत कालमें तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यहां स्वस्थानक्षेत्रके निकालते समय स्वयंप्रभू पर्वतके पर भागमें स्थित क्षेत्रको लाकर संख्यात सूच्यंगुलोंसे गुणित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र स्वस्थानक्षेत्र होता है । विहारवत्स्वस्थानक्षेत्रके निकालनेमें तिर्यक्प्रतरको स्थापित कर

संख्यात योजन बाहल्य हैं अत संख्यात योजनोंसे गुणित कर पुन: इस बाहल्यके उनंचास खण्ड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है । अपर्याप्त जीवोंके विहारवत्स्वस्थान नहीं होता । >

ʻसमुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ५७ ।ʼ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻसमुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवो द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ५८ ।ʼ

< लोकका असंख्यातवां भाग यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षा है, इसलिये यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । वेदनासमुध्दात और कषायसमुध्दात पदोंकी अपेक्षा अतीत कालमें तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? पुव्ववेरियसंबंधेण तिरियपदरं सव्वं हिंडमाणविगलिंदियाणं सव्वत्थ तीदे कसाय वेयणाणमुवलंभादो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, सव्वत्थ गमणागमणविरोहाभावादो । विगलिंदियअपज्जत्ताणं वेयण-कसायखेत्ताणं सत्थाणभंगो, तत्थ विहारवदिसत्थाणस्स अभावादो ।ʼ

ʻपंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं ।। ५९ ।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻलोगस्स असंखेंज्जदिभागो अट्ठचोद्दसभागा वा देंसूणा ।। ६० ।ʼ

ʻलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणवेक्खो । तेणेत्थ खेत्तपरूवणा कायव्वा । संपधि वासद्दत्थो ताव उच्चदे- सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदम्मि खेत्त

< क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, पूर्ववैरियोंके सम्बधसे सर्व तिर्यक्प्रतरमें घूमनेवाले विकलेन्द्रिय जीवोंके सर्वत्र अतीत कालकी अपेक्षा कषायसमुद्घात व वेदनासमुद्घात पद पाये जाते हैं । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, सर्वत्र उक्त जीवोंके गमनागमनमें कोई विरोध नही है । विकलेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके वेदना समुद्घात और कषायसमुद्घात पदोंकी अपेक्षा क्षेत्रका निरूपण स्वस्थान पदके समान है, क्योंकि विहारवतस्वस्थानपदका उनमें अभाव है । >

ʿपंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव स्वस्थानपदोंसे कितने क्षेत्रको स्पर्श करते हैं ? ।। ५९ ।।

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउपर्युक्त जीव स्वस्थानपदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग, अथवा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श करते हैं ।।६० ।।

< लोकका असंख्यातवां भाग यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षासे है । इसलिये यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । अब यहां वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते हैं - स्वस्थानपदोंसे तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इस क्षेत्रके निकालनेमें राजुप्रतरको स्थगित कर व संख्यात अंगूलोंसे गुणित कर और >

फोसणाणुगमे पंचिंदियाणं फोसणं

ʿआणिज्जमाणें रज्जुपदरं ठविय संखेज्जंगुलेहि गुणिय तसजीववज्जियसमुद्देहि ओट्टध्द-खेत्तमवणिय पदरागारेण ठइदे तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो होदि । पंचिंदियतिरि-क्खअपज्जत्ताणं विगलिंदियअपज्जत्ताणं च सत्थाणखेत्तं पुण सयंपहपव्वयस्स परदो चेव होदि, भोगभूमिपडिभागम्मि तेसिमुप्पत्तीए अभावादो । अधवा पुव्ववेरियदेवपओगेण भोगभूमिपडिभागदीव-समुद्दे पदिदतिरिक्खकलेवरेसु तसअपज्जत्ताणमुप्पत्ती अत्थि त्ति भणंताणमहिप्पाएण खेत्ते आणिज्जमाणे संखेज्जंगुलबाहल्लं रज्जुपदरं ठविय एगुण-वंचासखंडाणि करिय पदरागारेण ठइदे अपज्जत्तसत्थाणखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदि-भागो होदि । एवं

विहारसत्थाणेण वि, मित्तामित्तदवप्पओएण सव्वदीव-समुद्देसु विहारस्स विरोहाभावादो । णवरि देवाणं विहारमस्सिदूण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा होंति ।.

ʿसमुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोंसिदं ? ।। ६१ ।।

ʿसुगमं ।

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा असंखेज्जा वा भागा सव्वलोगो वा ।। ६२ ।।

< उसमसे त्रस जीव रहित समुद्रोंसे व्यापत क्षेत्रको कम कर प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता हैं । किन्तु पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त और विकलेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र स्वयंप्रभ पर्वतके पर भागमें ही है, क्योंकि, भोगभूमिप्रतिभागमें उनकी उत्पत्तिका अभाव है । अथवा पूर्ववैरी देवोंके प्रयोगसे भोगभूमिप्रतिभारूप द्वीप समुद्रोंमें पडे हुए तिर्यचशरीरोंमें त्रस अपर्याप्तोंकी उत्पत्ति होती है, ऐसा कहनेवाले आचार्योके अभिप्रायसे उक्त क्षेत्रके निकालते समय संख्यात अंगुल बाहल्यरूप राजुप्रतरको स्थापित कर व उनंचास खण्ड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थानक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्या-तवें भागप्रमाण होता है । इसी प्रकार विहार व स्वस्थानपदकी अपेक्षा भी स्पर्शनप्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, मित्र व शत्रु स्वरूप देवोंकेप्रयोगसे सर्व द्वीप-समुद्रोंमें विहारका कोई विरोध नही हैं । विशेष इतना है कि देवोंकेविहारका आश्रय कर कुछ कम आठ बटे चौदह भाग होते हैं । >

ʿसमुद्घातोंकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ६१ ।।

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿसमुद्घातोंकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग, कुछ कम आठ बटे चौदह भाग, असंख्यात बहुभाग, अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ६२ ।।

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणावेक्खो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा । वेयण-कसाय- वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, विहरंतदेवाणं सव्वत्थ वेयण-कसाय-विउव्वणाणं विरोहाभावादो । तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो, माणुसखेत्तस्स

संखेज्जदिभागो । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो । एवं कवाडगदेहि वि । णवरि तिरियलोगादो संखेज्ज-गुणो । एसो वासद्दत्थो । पदरगदेहि असंखेज्जा भागा, वादवलए मोत्तूण सव्वत्थावू-रणादो । मारणंतिय-लोगपूरणेहि सव्वलोगो फोसिदो ।

ʿउववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ६३ ।।

ʿसुगमं ।

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो सव्वलोगो वा ।। ६४ ।।

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति णिद्देसो वट्टमाणावेक्खो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा

< लोकका असंख्यातवां भाग यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षा है इस कारण यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, विहार करनेवाले देवोंके सर्वत्र वेदनासमुद्घात, कषाय-समुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंके विरोधका अभाव है । तैजससमुद्घात व आहारकस-मुद्घात पदोंसे चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषलोकका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है । दण्डसमुद्घातको प्राप्त जीवों द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षत्रसे असंख्या-तगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इसी प्रकार कपाटसमुद्घातगत जीवों द्वारा भी स्पृष्ट है । विशेष इतना है कि उनके द्वारा तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । प्रतरसमुद्घातगत जीवों द्वारा लोकका असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, इस अवस्थानमें लोक वातवलयोंको छोडकर सर्वत्र जीवप्रदेशोंसे पूर्ण होता हैं । मारणान्तिकसमुद्घात व लोकपूरणसमुद्घात पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट हैं । >

ʿउपर्युक्त जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ६३ ।।

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउपर्युक्त जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग, अथवा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ६४ ।।

< लोकका असंख्यातवां भाग यह निर्देश वर्तमान कालकी अपेक्षासे है । इस >

फोसणाणुगमे पंचिंदियाणं फोसणं

ʿकायव्वा । सव्वलोगट्ठिदसुहुमेइंदिएहिंतो पंचिंदिएसु आगंतूण उप्पण्णपढमसमयजीवाणं सव्वलोगे (१ अ. स. प्रत्यो: लोभ इति पाठ: ।) वांवित्तदंसणादो उववादेण सव्वलोगो फोसिदोण सत्थाण-समुग्घाद-उववा-देसु एयवियप्पेसु कधं सव्वत्थ बहुवयणणिद्देसो ? ण, तेसु सगदाणेयवियप्पसंभवादो ।

ʿपंचिंदियअपज्जत्ता सत्थाणेण केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ६५ ।।

ʿसुगमं ।

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ६६ ।।

ʿएदस्स अत्थं भण्णमाणे वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागों, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदस्स कारणं पुव्वमेव परूविदं ।

ʿसमुग्घादेहि उववादेहि केवडियं खेत्तं ? फोसिदं ।। ६७ ।।

ʿसुगमं ।

< कारण यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । सर्व लोकमें स्थित सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमेंसे पंचेन्द्रिय जीवोंमें आकर उत्पन्न होनेके प्रथमसमयवर्ती जीवोंके सर्व लोकमें व्याप्त देखे जानेसे उपपादकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है । >

ʿशंका- < स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंके एक विकल्परूप होनेपर सर्वत्र बहुवचनका निर्देश कैसे किया ? । >

ʿसमाधान- < नही, क्योंकि, उनमें स्वगत ओक विकल्पोंकी समभावना है । >

ʿपंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थानकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र स्पर्श करते है ।। ६६ ।।

< इस सूत्रका अर्थ कहते समय वर्तमान कालकी अपेक्षा स्पर्शनका निरूपण क्षेत्रप्ररूपणाके समान करना चाहिये । अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंका अवंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इसका कारण पूर्वमें ही कहा जा चुका है । >

ʿपंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवों द्वारा समुद्घात और उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ६७ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ६८ ।ʾ

ʿएत्थ खेत्तपरूवणं कायव्वं ।ʾ

ʿसव्वलोगो वा ।। ६९ ।ʾ

ʿवेयण-कसायपदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेंज्जदि-भागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववा-ढेहि सव्वलोगो फोसिदो ।ʾ

ʿकायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय-तेंउकाइय-वाउकाइय-सुहुमपुढविकाइय-सुहुमआउकाय सुहुमतेउकाइय (१ मु. प्रतौ पुढविकाइय वाउकाइय सुहुमतेउकाइय इति पाठः।)-सुहुमवाउकाइय तस्सेंव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण- समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ७० ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿसव्वलोगो ।। ७१ ।ʾ

ʿपंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवों द्वारा उक्त पदोंकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। ६८ ।ʾ

< यहां वर्तमान कालकी अपेक्षा क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । >

ʿअथवा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवों द्वारा उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ६९ ।ʾ

< पंचेन्द्रिय अपर्याप्तों द्वारा वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घात पदोंसे तीन लोंकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है । >

www.jainworld.com

ʿकायमार्गणानुसार पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, सूक्ष्मपृथिवीकायिक सूक्ष्मअप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सुक्ष्म वायुकायिक और उन्हींके पर्याप्त व अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्‌घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ।। ७० ।।

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउपर्युक्त जीव उक्त पदोंकी अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। ७१ ।।

फोसणाणुगमे पुढविकाइयादीणं फोसणं

ʿएत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगी । अदीदेण सत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो । तेउकाइएहि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्‌ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कम्म-भूमिपडिभागसयंभूरमणदीवध्दे चेव किर तेउकाइया होंति, ण अण्णत्थेत्ति केवि आइरिया भणंति । तेसिमहिप्पाएण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । अण्णे केवि आइरिया सव्वेसु दीव-समुद्देसु तेउकाइयबादरपज्जत्ता संभवंति त्ति भणंति । कुदो ? सयंभूरमणदीव-समुद्दुप्पण्णाणं बादरतेउपज्जत्ताणं वाएण हिरिज्जमाणाणं कीडणसील-देवपरतंताणं वा सव्वदीव-समुद्देसु सविउव्वणाणं गमणसंभवादो । केइआइरिया तिरियलो-गादो संखेज्जगुणो फोसिदो त्ति भणंति । कुदो ? सव्वपुढवीसु बादरतेउपज्जत्ताणं संभ-वादो । तिसु वि उवदेसेसु को एत्थ गेज्झो ? तइज्जो घेत्तव्वो, जुत्तीए अणुग्गहिदत्तादो । ण च सुत्तं तिण्हमेक्कस्स वि मुक्ककठं होऊण परूवयमत्थि । पहिल्लो उवएसो वक्खाणेहि वक्खाणाइरियेहि य संमदो त्ति एत्थो सो चेव णिद्दिट्ठो । वाउक्काइएहि वेउव्वियपदेण

< यहां वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा स्वस्थान, वेदनासमुद्‌-घात, कषायसमुद्‌घात, मारणान्तिकसमुद्‌घात और उपपाद पदोंसे उक्त जीव सव लोक स्पर्श करते हैं । तेजस्कायिक जीवोंके द्वारा वैक्रियिकपदकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । कर्मभूमिप्रतिभा-गरूप अर्ध स्वयम्भूरमण द्वीपमें ही तेजस्कायिक जीव होते हैं अन्यत्र नही, ऐसा कितने हो आचार्य कहते हैं । उसके अभिप्रायसे उक्त स्पशनक्षत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग होता है । अन्य

कितने ही आचार्य सर्व द्वीप-समुद्रोंमें तेजस्कायिक बादर पर्याप्त जीव संभव हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि, स्वयम्भुरमण द्वीप व समुद्रमें उत्पन्न बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका वायुसे लेजाये जानेके कारण अथवा क्रीडनशील देवोंके परतंत्र होनेसे सर्व द्वीप-समुद्रोंमें विक्रिया युक्त होकर गमन सम्भव है । कितने आचार्योका कहना है कि उक्त जीवोंके द्वारा वैक्रियिक-समुद्घातकी अपेक्षा तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि सर्व पृथिवियोंमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंकी सम्भावना है । >

ʽशंका–< उपर्युक्त तीनों उपदेशोंमें कौनसा उपदेश यहां ग्राह्य है ? >

ʽसमाधान–< तीसरा उपदेश यहां ग्रहण करने योग्य है, क्योंकि, वह युक्तिसे अनुगृहीत है । दूसरी बात यह है कि सूत्र इन तीन उपदेशोंमेंसे एकका भी मुक्तकण्ठ होकर प्ररूपक नही है । पहिला उपदेश व्याख्यानों और व्याखानाचार्योसे सम्मत है, इसलिये यहां उसीका निर्देश किया है । वायुकायिक जीवोंकेद्वारा वैक्रियिकपदसे तीन लोकोंका संख्यातवां भाग और >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʽतिण्हं लोगाणं संखेंज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? पंचरज्जुबाहल्लं तिरियपदरमावूरिय तीदे काले अवट्ठाणादो ।

ʽबादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेंउकाइय-बादरवण-प्फदिकाइयपतेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ७२ ।।

ʽसुगमं ।

ʽलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ७३ ।।

ʽएदस्स वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो । तीदे काले एदेहि तिण्हं लोगाणम-संखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोंसिदो । कुदो ? सव्वकालमट्ठपुढवीओ भवणविमाणाणि च अस्सिदूण अवट्ठाणादो ।

ʽसमुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ।। ७४ ।।

ʽसुगमं ।

< मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, उक्त जीवोंका अतीत कालकी अपेक्षा पांच राजु तिर्यक्प्रतरको पूर्ण कर अवस्थान है ।>

ʿबादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर और उनमें प्रत्येकके अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ७२ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿउपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ७३ ।।

< इस सूत्रकी वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा इन्ही जीवों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है क्योंकि, सर्व कालमें आठ पृथिवियों और भवनविमानोंका आश्रय करके उक्त जीवोंका अवस्थान है ।>

ʿसमुद्घात और उपपाद पदोंसे उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट हैं ? ।। ७४ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

फोसणाणुगमे पुढविकाइयादीणं फोसणं

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ७५ ।।

ʿएदस्स अत्थो वुच्चदे - तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणे फोसिदो । सेसं खेत्तभंगो ।

ʿसव्वलोगो वा ।। ७६ ।।

ʿएत्थ वासद्दत्थो वुच्चदे - वेयण-कसायपदपरिणदेहि वेउव्वियपदपरिणदेहि य तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्ढाइज्जादो असंखे-ज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वेउव्वियपदस्स पुव्वं व तिविहं वक्खाणं कायव्वं । मारणं-तिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, वट्टमाणतीदकालदंसणादो ।

ʿबादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ - बादरवणप्फदिकाइयपत्तेय- सरीरपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।।७७ ।।

ʿसुगमं ।

www.jainworld.com

ʿसमुद्घात व उपपाद पदोंसे उक्त जीवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट हैं ।। ७५ ।ʾ

< इस सूत्रका अर्थ कहते हैं - वर्तमान कालमें उक्त पदोंकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । शेष कथन क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । >

ʿअथवा उक्त पदोंकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ७६ ।ʾ

< यहां वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते हैं - वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घात पदोंसे परिणत तथा वैक्रियिक पदसे परिणत उक्त जीवोंके द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यहां वैक्रियिक पदकी अपेक्षा पूर्वके समान तीन प्रकार व्याख्यान करना चाहिये । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, इन पदोंमें वर्तमान व अतीत काल देखे जाते हैं । >

ʿबादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ७७ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। ७८ ।ʾ

ʿएत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणप्पणादो । तीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि-भागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? अपज्जत्ताणं व पज्जत्ताणं पि सव्वपुढवीसु अवट्ठाणविरोहाभावादो । ण च अट्ठसु पुढवीसु पुढवि-आउ-तेउ-वाउबादराणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीराणं च अपज्जत्ता चेव होंति त्ति जुत्ती अत्थि । अण्णाइरियवक्खाणं पुण एवं ण होदि । तं कधं ? बादरआउपज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएहि सत्थाण- वेयण-कसायपरिणएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो, चित्ताए उवरि-मभागे मोत्तूण बादरआउपज्जत्त-बादरवणप्फदकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ताणमण्णत्थ अवट्ठाणाभावादो । एवं

बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं, पत्तेयसरीरत्तं पडि भेदाभावादो । एवं बादरतेउकाइयपज्जत्ताणं पि । कुदो ? सयंपहपव्वयस्स परभागे चेय एदेसिमवट्ठाणादो । एदं च अण्णाइरियवक्खाणं चक्खिंदियपमाणबलपयट्टं ƒ

ʿउपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा लोकका असख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ७८ ।ƒ

< यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है । अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा, और अढाईद्वीपसे असंख्या-तगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, अपर्याप्तोंके समान पर्याप्त जीवोंका भी सर्व पृथिवियोंमें अवस्थान होनेमें कोई विरोध नही हैं । आठ पृथिवियोंमें पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक व वायुकायिक बादर जीवों तथा बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अपर्याप्त जीव ही होते हैं, ऐसी कोई युक्ति भी नही हैं । परतु अन्य आचार्योका व्याख्यान ऐसा नहीं है । >

ʿशंकाƒ< यह कैसे ? >

ʿसमाधानƒ< बादर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवों द्वारा स्वस्थान, वेदनासमुद्घात व कषायसमुद्घात पदोंसे परिणत होकर तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग और तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है, क्योंकि चित्रा पृथिवीके उपरिम भागको छोडकर अप्कायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अन्यत्र अवस्थान नहीं है । इसी प्रकार बादर निगोद-प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये, क्योंकि, प्रत्येकशरीरत्वके प्रति दोनोंमें कोई भेद नही है । इसी प्रकार बादर तेजस्का-यिक पर्याप्त जीवोंका भी समझना चाहिये, क्योंकि, स्वयंप्रभ पर्वतकेपर भागमें ही इनका अवस्था-न है । यह अन्य आचार्योका व्याख्यान चक्षु इन्द्रियरूप प्रमाणकेबलसे प्रवृत्त है । >

फोसणाणुगमे पुढविकाइयादीणं फोसणं

ʿपुढविकाइया सव्वपुढवीसु होंति त्ति एदं पि चक्खिंदियबलपयट्टं चेव । ण च पुढवि--काइयादओ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तसरीरा इंदियगेज्झा, जेण इंदियबलेण विहि-पडिसेहो होज्ज । तम्हा सव्वपुढवीओ अस्सिदूण एदेसिं बादरमपज्जत्ताणं व पज्जत्ताणं पि अवट्ठाणेण होदव्वं,

विरोहाभावादो । तत्थ जलंता णिरयपुढवीसु अग्गिणो वहंतीओ णईओ च णत्थि त्ति जदि अभावो वुच्चदे, (१ अ. स. प्रत्यो वुच्चदि इति पाठः ।) तं पि ण घडदे,-

< षष्ठ-सप्तमयोः शीतं शीतोष्णं पंचमें स्मृतम् ।

चतुर्ष्वत्युष्णमुद्दिष्टस्तासामेव महीगुणा ।। १ ।। >

ʻइदि तत्थ वि आउ-तेऊणं संभवादो । कधं पुढवीणं हेट्ठा पत्तेयसरीराणं संभवो ? ण, सीएण वि सम्मुच्छिज्जमाणपणग (२ मु. प्रतौ पगण इति पाठः ।)-कुहुणादीणमुवलंभादो । कधमुण्हम्हि संभवो ? ण, अच्चुण्हे वि समुप्पज्जमाणजवासपाईणमुवलंभादो ।

< पृथिवीकायिक जीव सर्व पृथिवियोंमे होते हैं यह भी व्याख्यान चक्षु इन्द्रियकेबलसे ही प्रवृत्त है । और अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण शरीरवाले पृथिवीकायिकादि जीव इन्द्रियोंसे ग्राह्य हैं नही, जिससे इन्द्रियवलसे उनका विधान व प्रतिषेध हो सके । अतएव इनके बादर अपर्याप्त जीवोंके समान पर्याप्त जीवोंका भी अवस्थान सर्व पृथिवियोंका आश्रय करकेहोंना चाहिये, क्योंकि, उसमें कोंई विरोध नही है । वहां नरकपृथिवियोंमें जलती हुई अग्नियां और बहती हुई नदियां नही है, इस कारण यदि उनका अभाव कहते हो तो वह भी घटित नहीं होंता, क्योंकि ->

< छठी और सातवीं पृथिवीमें शीत तथा पांचवींमे शीत व उष्ण दोनों माने गये हैं । शेष चार पृथिवियोंमें अत्यन्त उष्णता है । ये उनकेही पृथिवीगुण हैं ।। १ ।। >

< इस प्रकार उन नरक पृथिवियोंमें अप्कायिक व तेजस्कायिक जीवोंकी सम्भावना है । >

ʻशंका- < पृथिवियोंकेनीचे प्रत्येकशरीर जीवोंकी सम्भावना कैसे है ? >

ʻसमाधान- < नहीं क्योंकि शीतसे भी उत्पन्न होनेवाले पणग और कुहुन आदि वनस्प-तिविशेष पाये जाते हैं । >

ʻशंका- < उष्णतामें प्रत्येकशरीर जीवोंका उत्पन्न होना कैसे सम्भव है ? >

ʻसमाधान- < नहीं, क्योंकि, अत्यन्त उष्णतामें भी उत्पन्न होनेवाले जवासप आदि वनस्पतिविशेष पाये जाते हैं । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻसमुग्घाद उववादेहि केवडियं खेत्तं ? फोसिदं ।।७९ ।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।।८० ।ʼ

ʻएत्थ खेत्तवण्णणं कायव्वं, वट्टमाणप्पणादो ।ʼ

ʻसव्वलोगो वा ।।८१ ।ʼ

ʻएत्थ ताव वासद्दत्थो उच्चदे । तं जहा - वेयण-कसाय-वेउव्वियपदेदि तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, एदेसिं सव्वत्थ गमणागमणं पडि विरोहाभावादो ।ʼ

ʻबादरवाउक्काइया तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।।८२ ।ʼ

ʻसमुद्घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा उक्त जीवो द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।।७९ ।ʼ

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʻसमुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवो द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। ८० ।ʼ

< यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।>

ʻअथवा, समुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा सर्व लोक स्पृष्ट हैं ।।८१ ।ʼ

< यहां पहले वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार हैं - वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवा भाग तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, इन जीवोंकेसर्वत्र गमनागमनकेप्रति कोई विरोध - नहीं है ।>

ʻबादर वायुकायिक और उसकेही अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।।८२ ।ʼ

फोसणाणुगमे पुढविकाइयादीणं फोसणं

‘सुगमं ।

‘लोगस्स संखेज्जदिभागो ।। ८३ ।।

‘कुदो ? पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमावूरिय अवट्ठाणादो । लोगंते अट्ठपुढवीणं हेट्ठा वि अवट्ठाणमत्थि किंतु तमेदस्स असंखेज्जदिभागो ।

‘समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ८४ ।।

‘सुगमं ।

‘लोगस्स संखेज्जदिभागो ।। ८५ ।।

‘सुगमं ।

‘सव्वलोगो वा ।। ८६ ।।

‘एत्थ वासद्दत्थो वुच्चदे - वेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाण संखेज्जदि-

----

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘उपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ८३ ।।

< क्योंकि, पांच राजु बाहल्यरूप राजुप्रतरको पूर्ण कर उक्त जीवोंका अवस्थान है । उनका अवस्थान लोकान्तमें तथा आठ पृथिवियोंकेनीचे भी है, किन्तु वह इसकेअसंख्यातवें भागमात्र है । >

‘उपर्युक्त जीव समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ८४ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘उपर्युक्त जीव उक्त पदोंसे लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ८५ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

‘अथवा, सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। ८६ ।।

< यहां वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते है -- वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे तीन लोकोंका संख्यातवां भाग तथा मनुष्यलोक व तिर्य ->

ʿभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । णवरि वेउव्वियं वट्टमाणेण खेत्तभंगो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो ⅃

ʿबादरवाउपज्जत्ता सत्थाणेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ।। ८७ ।⅃

ʿसुगमं ⅃

ʿलोगस्स संखेज्जदिभागो ।। ८८ ।⅃

ʿअदीद वट्टमाणेहि पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरमावूरिय अवट्ठाणादो ⅃

ʿसमुग्घाद-उववादेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। ८९ ।⅃

ʿसुगमं ⅃

ʿलोगस्स संखेंज्जदिभागो ।। ९० ।⅃

ʿएदं वट्टमाणमस्सिदूण परूविदं । तेण वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि तिण्हं

< ग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विशेष इतना है कि वर्तमान कालकी अपेक्षा वैक्रियिकपदका निरूपण क्षेत्रप्ररूपणाकेसमान है । मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है । >

ʿबादर वायुकायिक पर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ८७ ।⅃

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका संख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। ८८ ।⅃

< क्योंकि, अतीत और वर्तमान कालोंको अपेक्षा उक्त जीवोंका पांच राजु बाहल्यरूप राजुप्रतरको पूर्णकर अवस्थान है। >

ʿसमुद्घात और उपपाद पदोंकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ८९ ।⅃

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउक्त पदोंकी अपेक्षा लीकका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। ९० ।⅃

< यह वर्तमान कालका आश्रय कर कथन किया गया है । इसलिये वेदना--समुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे तीन लोकोंका >

फोसणाणुगमे पुढविकाइयादीणं फोसणं

ʿलोगाणं संखेज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो वट्टमाणे किण्ण पुसिज्जदि ? ण, पंचरज्जुबाहल्लरज्जुपदरं मोत्तूण अण्णत्थ मारणंतिय-उववादे करेमाणजीवाणं सुट्ठ, त्थोवत्तुवलंभादो । वेउव्वि-यपदेण खेत्तभंगो ।ʾ

ʿसव्वलोगो वा ।। ९१ ।।ʾ

ʿवेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाणं संखेंज्जदिभागो, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, तीदकालप्पणादो ।ʾ

ʿवणप्फदिकाइया णिगोदजीवा सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुम-णिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं खेंत्तं फोसिदं ? ।। ९२ ।।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

< संख्यातवां भाग तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंखयातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । >

ʿशंका-ʾ< मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे वर्तमानमे सर्व लोक स्पर्श क्यों नहीं किया जाता ? >

ʿसमाधान-ʾ< नहीं, क्योंकि पांच राजु बाहल्यरूप राजुप्रंतरको छोडकर अन्यत्र मारणा-न्तिकसमुद्घात और उपपादको करनेवाले जीव बहुत थोडे पाये जाते हैं । वैक्रियिक पदकी अपेक्षा क्षेत्रप्ररूपणाकेसमान जानना चाहिये । >

ʿअथवा, उपर्युक्त जीवों द्वारा समुद्घात व उपपादसे सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ९१ ।।ʾ

< वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे तीन लोकोंका संख्यातवां भाग तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है, क्योंकि, अतीत कालकी विवक्षा है । >

ʻवनस्पतिकायिक, निगोदजीव, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म निगोदजीव तथा उनके ही पर्याप्त व अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।।९२ ।।ʼ

< यह सूत्र सुगम है । >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʻसव्वलोगो ।।९३ ।।ʼ

ʻकुदो ? आणंतियादो, सव्वत्थ जल-थलागासेसु अवट्ठाणं पडि विरोहाभावादो च ।ʼ

ʻबादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अपजत्ता सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ?।।९४ ।।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।।९५ ।।ʼ

ʻकुदो ? अट्ठपुढवीओ चेवअस्सिदूण (१ मु. प्रतौ चेव मस्सिदूण इति पाठः।) अवट्ठाणादो । तदो एदेहि तिण्हं लोगा-णमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो अदीद-वट्टमाणेहि फोसिदो ।ʼ

ʻसमुग्घाद-उववादेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।।९६ ।।ʼ

ʻसुगमं ।ʼ

ʻसव्वलोंगो ।।९७ ।।ʼ

ʻउपर्युक्त जीव उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।।९३ ।।ʼ

< क्योंकि, वे अनन्त हैं; तथा जल, स्थल व आकाशमें सर्वत्र उनके अवस्थानमें कोई विरोध नहीं है । >

ʻबादर वनस्पतिकायिक व बादर निगोदजीव तथा उनकें ही पर्याप्त व अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।।९४ ।।ʼ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʻपूर्वोक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।।९५ ।।ʼ

< क्योंकि, आठ पृथिवियोंका ही आश्रय कर उनका अवस्थान है । अत एव इन जीवोंके द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र अतीत व वर्तमान कालोंकी अपेक्षा स्पृष्ट है । >

ʿसमुद्घात व उपपाद पदोंसे उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।। ९६ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿसमुद्घात व उपपाद पदोंसे उक्त जीवो द्वारा सर्व लोक स्पृष्ट है ।। ९७ ।ʾ

फोसणाणुगमे मण-वचिजोगीणं फोसणं

ʿतीदवट्टमाणेसु मारणंतिय-उववादेहि सव्वलोगावूरणादो ।ʾ

ʿतसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिय-पंचिंदिय-पज्जत्त-अपज्जत्तभंगो ।। ९८ ।ʾ

ʿसुगममेदं ।ʾ

ʿजोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगी सत्थाणेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ।। ९९ ।ʾ

ʿसुगमं ।ʾ

ʿलोगस्स असंखेज्जदिभागो ।। १०० ।ʾ

ʿएसो वट्टमाणणिद्देसो । तेणेत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा ।ʾ

ʿअट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ।। १०१ ।ʾ

ʿएत्थ ताव वासद्दत्थो वुच्चदे-सत्थाणेण अप्पिदजीवेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदि

< क्योंकि, अतीत व वर्तमान कालोंमें मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे उनके द्वारा सर्व लोक पूर्ण किया जाता है । >

ʿत्रसकायिक, त्रसकायिक पर्याप्त और त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंके स्पर्शनका निरूपण पंचेन्द्रिय, पंचन्द्रिय पर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है ।। ९८ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿयोगमार्गणानुसार पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। ९९ ।ʾ

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿपूर्वोक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। १०० ।ʾ

< यह कथन वर्तमान कालकी अपेक्षा है । अतएव यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये । >

ʿअथवा, उक्त जीव स्वस्थान पदोंसे कुछ कम आठ बटें चौदह भाग स्पर्श करते है ।। १०१ ।ʾ

< यहां प्रथम वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते हैं स्वस्थानकी अपेक्षा प्रकृत्त जीवों द्वारा तीन >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । कुदो ? अट्ठरज्जु-बाहल्ललोगणालीए मण-वचिजोगीणं विहारुवलंभादो ।ʾ

ʿसमुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। १०२ ।ʾ

ʿसुगममेद ।ʾ

ʿलोगस्स असंखेंज्जदिभागो ।। १०३ ।ʾ

ʿएत्थ खेत्तवण्णणा कायव्वा, वट्टमाणप्पणादो ।ʾ

ʿअट्ठचोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा ।। १०४ ।ʾ

ʿआहार-तेजइयपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदि-भागो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । वेयण-कसाय-वेउव्विएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अट्ठरज्जुआयदलोगणालीए सव्वत्थ तीदे काले वेयण-कसाय-विउव्वणाण-मुवलंभादो । मारणंतिएण सव्वलोगो ।ʾ

< लोकोका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदहं भाग स्पृष्ट है, क्योंकि, मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंका विहार आठ राजु बाहल्य-युक्त लोकनालीमें पाया जाता है । >

ʿपूर्वोक्त जीवों द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट हैं ? ।। १०२ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿपूर्वोक्त जीवों द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। १०३ ।।

< यहां क्षेत्रप्ररूपणा करना चाहिये, क्योंकि, वर्तमान कालकी प्रधाानता है ।>

ʿअथवा, उन्हीं जीवों द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग वा सर्व लोक स्पृष्ट हैं ।। १०४ ।।

< आहारकसमुद्घात और तैजससमुद्घात पदोंकी अपेक्षा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, आठ राजु आयत लोकनालीमें सर्वत्र अतीत कालकी अपेक्षा वेदना, कषाय और वैक्रियिक समुद्घात पाये जाते हैं । मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है ।>

फोसणाणुगमे कायजोगीणं फोसणं

ʿउववादो णत्थि ।। १०५ ।।

ʿतत्थ मण-वचिजोगाणमभावादो ।

ʿकायजोगि-ओरालियमिस्सकायजोगी सत्थाण-समुग्घाद उववादेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। १०६ ।।

ʿसुगमं ।

ʿसव्वलोगो ।। १०७ ।।

ʿएदस्स अत्थो - सत्थाण वेयण-कसाय-मारणंतिय-उववादेहि वट्टमाणादीदेसु सव्वलोगो फोसिदो । कुदो ? सव्वत्थ गमणागमणावट्ठाणं पडि विरोहाभावादो । विहा-रवदिसत्थाण-वेउव्वियपदेहि वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । णवरि वेउव्वियपदेण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो । तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणम-संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । एत्थ वासद्देण विणा कधमेसो

ʿपांचो मनोंयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंके उपपाद पद नहीं होता ।। १०५ ।।

www.jainworld.com

< क्योंकि, उपपाद पदमें मनोयोग व वचनयोगका अभाव है । >

ʿकाययोगी और औदारिकमिश्रकाययोगी जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।। १०६ ।J

< यह सूत्र सुगम है । >

ʿउपर्युक्त जीव उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। १०७ ।J

< इसका अर्थ - स्वस्थानस्वस्थान वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणांन्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे वर्तमान व अतीत कालोंमें उक्त जीवोंने सर्व लोकका स्पर्श किया है, क्योंकि, उन जीवोंके सर्वत्र गमनागमन और अवस्थानमें कोई विरोध नहीं है । विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घात पदोंसे वर्तमानकालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागोंका स्पर्श किया है । विशेष इतना है कि वैक्रियिक पदकी अपेक्षा तीन लोकोंके संख्यातवें भागका स्पर्श किया है । तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घात पदोंसे चार लोकोंके असंख्यातवे भाग व मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागका स्पर्श किया है । >

ʿशंका-< प्रस्तुत सूत्रमें वा शब्दके विना यहां इस अर्थका व्याख्यान कैसे किया जाता है ? >

छक्खंडागमे खुद्दाबंधो

ʿअत्थो एत्थ वक्खाणिज्जदि ? ण एस दोसो, एदस्स सुत्तस्स देसामासियत्तादो । विहारवदिसत्थाण-वेउव्विय-तेजाहारपदाणि ओरालियमिस्से णत्थि ।J

ʿओरालियकायजोगी सत्थाण-समुग्घादेहि केंवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। १०८ ।J

ʿसुगमं ।J

ʿसव्वलोगो ।। १०९ ।J

ʿसत्थाणसत्थाण-वेयण-कसाय-मारणंतिएहि वट्टमाणातीदेसु सव्वलोगो फोसिदो विहारवदिसत्थाणेण वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरिय-लोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । वेउव्वियपदेण वट्टमाणं खेत्तं । अदीदेण तिण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, (१ ब. प्रतौ भागे इति पाठः।) णर-तिरियलोगेहिंतो असं-खेज्जगुणो फोसिदो । एदं सुत्तं देसामासियं काऊण सव्वमेदं वक्खाण सुत्तारूढं कायव्वं ।

ʿसमाधान- < यह कोई दोष नही है, क्योंकि यह सूत्र देशामर्शक है ।>

< विहारवत्स्वस्थान, वैक्रियिकसमुद्घात, तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घात पद औदारिकमिश्रयोगमें नहीं होते हैं ।>

ʿऔदारिककाययोगी जीव स्वस्थान और समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ।।१०८ ।।

< यह सूत्र सुगम है ।>

ʿऔदारिककाययोगी जीव स्वस्थान और समुद्घातकी अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श करते हैं ।। १०९ ।।

< स्वस्थानस्वस्थान वेदनासमुद्घात कषायसमुद्घात और मारणान्तिकसमुद्घात पदोंसे उक्त जीवोंने सर्व लोक स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थानसे वर्तमान कालकी अपेक्षा स्पर्शनका निरूपण क्षेत्रकेसमान है । अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुण क्षेत्रका स्पर्श किया हैं । वैक्रियिक पदसे वर्तमान कालकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंके असंख्या-तवें भाग तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया है । इस सूत्रको देशामर्शक करकेयह सब सूत्रविहित व्याख्यान करना चाहिये ।>